

# अर्थशास्त्र

(समष्टि अर्थशास्त्र)

अध्याय-3: मुद्रा एवं बैंकिंग



## मुद्रा

मुद्रा को ऐसी वस्तु के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो विनिमय के माध्यम, मूल्य के मापक, स्थगित भुगतानों के माप तथा मूल्य संचय हेतु, संचय रूप से स्वीकार की जाती है।

## मुद्रा आपूर्ति

मुद्रा पूर्ति से अभिप्राय एक निश्चित समय पर देश में जनता के पास कुल मुद्रा के स्टॉक से है।

मुद्रा की आपूर्ति = जनता के पास करेंसी + बैंकों के पास मांग जमाएं + रिजर्व बैंक के पास अन्य जमाएं

$$MS = C + DD + OD$$

## मुद्रा आपूर्ति के घटक

- जनता के पास करेंसी (सिक्के व नोट)
- मांग जमाएँ।

## मांग जमाएँ

ये वे जमाएँ हैं जो किसी भी समय मांगने पर बैंक से निकलवाई जा सकती हैं या जिन्हें चैक द्वारा भी निकलवाया जा सकता है।

## व्यावसायिक बैंक का अर्थ

व्यावसायिक बैंक वह वित्तीय संस्था है जो मुद्रा तथा साख में व्यापार करती है। व्यावसायिक बैंक ऋण प्रदान करने के उद्देश्य से जनता से जमाएँ स्वीकार करते हैं तथा अपने लिए लाभ का सृजन करती हैं।

## व्यावसायिक बैंकों द्वारा साख निर्माण / मुद्रा निर्माण :-

साख निर्माण से तात्पर्य बैंकों की उस शक्ति से है जिसके द्वारा वे प्राथमिक जमाओं का विस्तार करते हैं। बैंकों द्वारा साख सृजन की प्रक्रिया तथा वैधानिक आरक्षित अनुपात (LRR) में विपरीत सम्बन्ध होता है।

- जमा सृजन = प्रारम्भिक जमा x जमा गुणक।
- शुद्ध / निवल साख का सृजन = जमा सृजन - प्रारम्भिक जमा।

## केन्द्रीय बैंक

एक देश की बैंकिंग व वित्तीय प्रणाली में सर्वोच्च संस्था है। जो देश के मौद्रिक व बैंकिंग ढाँचे का संचालन, नियंत्रण, निर्देशन एवं नियमन करती है तथा देश के हित में मौद्रिक नीति का निर्माण करती है।

## केन्द्रीय बैंक के कार्य

- नोट निर्गमन का एकाधिकार अर्थात् वैधानिक मुद्रा का जारीकर्ता बैंक
- सरकार का बैंकर, अभिकर्ता एवं सलाहकार
- बैंकों का बैंक तथा पर्यवेक्षक
- साख नियंत्रक
- विदेशी मुद्रा का एक मात्र संग्राहक और संरक्षक

## रेपो दर

वह ब्याज दर जिस पर केन्द्रीय बैंक वैधानिक तरलता अनुपात की प्रतिभूतियों के अतिरिक्त शेष प्रतिभूति पर पुनक्रय प्रस्ताव के बदले व्यायवसायिक बैंकों को अल्पकाल के लिए ऋण प्रदान करता है, रेपो दर कहलाता है।

## रिवर्स रेपो दर :-

वह दर जिस पर व्यवसायिक बैंक केन्द्रीय बैंक के पास अपना अतिरिक्त फंड जमा करके केन्द्रीय बैंक से सरकारी प्रतिभूति के पुनर्विक्रय प्रस्ताव के तहत प्रतिभूति क्रय करते हैं।

## वैधानिक तरलता अनुपात (SLR) :-

SLR से अभिप्राय वाणिज्यिक बैंकों की तरल परिसंपत्तियों से है जो उन्हें अपनी कुल जमाओं के न्यूनतम प्रतिशत के रूप में अपने पास रखने की आवश्यकता होती है।

## नकद आरक्षित अनुपात (CRR) :-

प्रत्येक व्यापारिक बैंक को अपने पास कुल जमा राशियों का एक न्यूनतम अनुपात केन्द्रीय बैंक के पास कानूनन जमा करना होता है। इसे नकद आरक्षित अनुपात कहते हैं।

## खुले बाजार की क्रियाएँ (Open Market Operations) :-

- देश के केंद्रीय बैंक (रिजर्व बैंक) द्वारा खुले बाजार में प्रतिभूतियों (Securities) के खरीदने अथवा बेचने से संबन्धित क्रिया को खुले बाजार की क्रिया कहते हैं।
- जब रिजर्व बैंक (केंद्रीय बैंक) बाजार में प्रतिभूतियों को बेचना प्रारंभ करता है तो वाणिज्य बैंकों के नकदी कोषों में कमी आ जाती है, इसके परिणामस्वरूप बैंकों की साख निर्माण क्षमता घट जाती है। इस प्रकार, प्रतिभूतियों की बिक्री साख की उपलब्धता को कम कर देती है।

## बैंक दर (Bank Rate) :-

जिस दर पर देश का केंद्रीय बैंक वाणिज्यिक बैंकों को ऋण देता है उसे बैंक दर कहते हैं।

## केन्द्रीय बैंक के कार्य ' मुद्रा जारी करना ' :-

- मुद्रा जारी करना केन्द्रीय बैंक का प्राथमिक और बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्य है। आजकल प्रत्येक देश में केंद्रीय बैंक और इसलिए हमारे देश में रिजर्व बैंक को नोट - निर्गमन का एकाधिकार प्राप्त है इस कार्य का इतना अधिक महत्त्व हो गया है कि केंद्रीय बैंक को ' निर्गमन बैंक ' (Bank of Issue) ही कहा जाने लगा है।
- नोट जारी करने की दृष्टि से केंद्रीय बैंक तीन मुख्य बातों को ध्यान में रखता है : एकरूपता, लोचशीलता (आवश्यकता के अनुसार मुद्रा की मात्रा तय करना), और सुरक्षा।

- रिजर्व बैंक मुद्रा की वृद्धि को एक सीमा के भीतर ही बनाए रखने का प्रयत्न करता है और इस प्रकार, स्फीतिकारी दबावों को नियंत्रण में रखता है।

### केन्द्रीय बैंक के कार्य " बैंकों का बैंक " :-

केन्द्रीय बैंक बैंकों का बैंक हैं। केन्द्रीय बैंक का अन्य व्यवसायिक बैंकों के साथ वैसा ही संबंध होता है, जैसा एक साधारण बैंक का अपने ग्राहकों के साथ होता है। केन्द्रीय बैंक व्यवसायिक बैंकों के कोषों का संरक्षक होता है तथा आवश्यकता पड़ने पर व्यापारिक बैंकों को ऋण प्रदान करता है।

### केन्द्रीय बैंक के कार्य ' सरकार का बैंक ' :-

- केन्द्रीय बैंक वे सभी बैंकिंग सुविधाएँ सरकार को प्रदान करता है, जो व्यापारिक बैंक द्वारा अपने ग्राहकों को प्रदान की जाती हैं।
- केन्द्रीय बैंक सरकार के बैंक एजेंट व वित्तीय सलाहकार के रूप में सरकार के लिए कोषों की व्यवस्था करता है।
- एक एजेंट के रूप में केन्द्रीय बैंक सरकार के लिए प्रतिभूतियों का क्रय - विक्रय तथा सार्वजनिक ऋण का प्रबन्ध करता है।
- साथ ही यह सरकार को उचित मौद्रिक नीतियों के निर्माण हेतु उपयोगी परामर्श प्रदान करता है।

*Future's Key*

# Fukey Education

## NCERT SOLUTIONS

### प्रश्न (पृष्ठ संख्या 53)

प्रश्न 1 वस्तु विनिमय प्रणाली क्या है? इसकी क्या कमियाँ हैं?

उत्तर – जब एक वस्तु का विनिमय प्रत्यक्ष रूप में दूसरी वस्तु से होता है तो उसे वस्तु विनिमय कहा जाता है। अन्य शब्दों में, वस्तु विनिमय प्रणाली उस प्रणाली को कहा जाता है जिसमें वस्तु का लेन-देन वस्तु से किया जाता है।

1. **मूल्य संचय का अभाव-** यहाँ मूल्य का संचय वस्तुओं के रूप में हो सकता है, परन्तु मूल्य की वस्तुओं के रूप में संचित करने में निम्नलिखित कठिनाइयाँ हैं-
  - i. वस्तुओं को रखे हुए भी मूल्यहास होता है। उदाहरण के लिए यदि एक व्यक्ति अपनी बेटी के विवाह के लिए मूल्य का संचय करना चाहता है तो वह क्या संचय करेगा? क्या वह बारातियों का भोजन बनवाकर रख देगा? क्या वह फर्नीचर खरीदकर रख देगा?
  - ii. वस्तुओं के मूल्य में अंतर आ जाता है।
  - iii. वस्तुएँ नाशवान होती हैं।
  - iv. मूल्य की वस्तुओं के रूप में संचित करने में अधिक स्थान की आवश्यकता पड़ती है।
2. **स्थगित भुगतान के मानक का अभाव-** वस्तु विनिमय व्यवस्था में वस्तुओं का भविष्य में भुगतान करने में कठिनाई होती है। इस प्रणाली में ऐसी कोई इकाई नहीं होती जिसे स्थगित/भविष्य भुगतान के मानक के रूप में प्रयोग कर सकें। वस्तुओं के रूप में भावी भुगतानों का वस्तुओं के रूप में भुगतान किया जाए तो इसमें कई कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं। जैसे भविष्य में दी जानेवाली वस्तुओं और सेवाओं की गुणवत्ता को लेकर विवाद, भविष्य में भुगतान की वस्तु पर असहमति, अनुबंध की अवधि के दौरान वस्तु के अपने मूल्यमान में उतार-चढ़ाव का जोखिम जिससे एक को लाभ तथा दूसरे को हानि होने की संभावना रहती है। उदाहरण के लिए कीमत X ने 10 वर्ष के लिए अपना रथ श्रीमान Y को दिया। 10 वर्ष बाद वह वही रथ नहीं लौटा सकता, क्योंकि वे पुराने हो गए। यदि वह नया रथ लौटाता है तो गुणवत्ता पहले वाले रथ से अधिक भी हो सकती है और कम भी।

3. **सामान्य लेखा इकाई का अभाव-** वस्तु विनिमय प्रणाली में भिन्न-भिन्न वस्तुओं का मूल्य जानने के लिए और तुलना करने के लिए कोई सर्वमान्य मापक नहीं हैं। उदाहरण के लिए यदि कोई व्यक्ति गेहूँ का लेन-देन करना चाहता है तो उसे गेहूँ का मूल्य कपड़े के रूप में (1 किलो गेहूँ = 1 मीटर कपड़ा), दूध के रूप में (1 किलो गेहूँ = 2 लीटर दूध) आदि बाज़ार में उपलब्ध हर वस्तु के रूप में पता होना चाहिए। यह अत्यन्त कठिन कार्य है।

4. **वस्तु विनिमय प्रणाली की निम्नलिखित कमियाँ हैं-**

**आवश्यकताओं के दोहरे संयोग का अभाव-** वस्तु विनिमय के लिए आवश्यक है कि एक व्यक्ति की आवश्यकता की वस्तु दूसरे व्यक्ति के पास हो और जो वस्तु दूसरा व्यक्ति चाहता है, वह पहले के पास हो। दूसरे शब्दों में, पहले व्यक्ति की वस्तु की पूर्ति, दूसरे की माँग की वस्तु हो और दूसरे व्यक्ति की पूर्ति की वस्तु, पहले व्यक्ति के माँग की वस्तु हो। जब तक आवश्यकताओं का इस प्रकार का दोहरा संयोग नहीं होता, वस्तु की लेन-देन नहीं हो सकती। उदाहरण के लिए यदि किसी के पास जूता है, परन्तु वह उसके बदले में गेहूँ लेने के लिए तैयार नहीं है तो विनिमय संभव नहीं है।

5. **अन्य कठिनाइयाँ-**

i. वस्तु विनिमय में ऐसी वस्तुओं के लेन-देन में बहुत कठिनाई आती है जिसका विभाजन और उपविभाजन नहीं हो सकता। मान लो 1 बैल = 100 किलो गेहूँ परन्तु बैल का मालिक केवल 50 किलो गेहूँ खरीदना चाहता है तो वह आधा बैल नहीं दे सकता।

ii. वस्तु विनिमय प्रणाली के अन्तर्गत यदि कोई व्यक्ति एक स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान पर जाना चाहता है तो वह अपने धन को दूसरे स्थान पर ले जाने में असमर्थ हो सकता है। जैसे कोई अपने खेत एक स्थान से दूसरे स्थान पर नहीं ले जा सकता।

प्रश्न 2 मुद्रा के प्रमुख कार्य क्या-क्या हैं? मुद्रा किस प्रकार वस्तु विनिमय प्रणाली की कमियों को दूर करता है?

उत्तर - "मुद्रा के हैं कार्य चार - माध्यम, मापक, मानक, भण्डार" मुद्रा के प्रमुख कार्यों को दो भागों में बाँटा जा सकता है।

• प्राथमिक कार्य

1. विनिमय का माध्यम

2. मूल्य की इकाई

• गौण कार्य

1. स्थगित भुगतानों का मान

2. मूल्य का संचय

3. मूल्य का हस्तांतरण

1. **विनिमय का माध्यम**- यह मुद्रा का सर्वप्रथम और सर्वमहत्त्वपूर्ण कार्य है। मुद्रा के इस कार्य ने क्रय और विक्रय की इस क्रिया को एक दूसरे से भिन्न कर दिया है। आज का समय सभी अर्थव्यवस्थाएँ मौद्रिक अर्थव्यवस्थाएँ हैं। वस्तु विनिमय प्रणाली के सबसे बड़ी कमी दोहरे संयोग का अभाव है। इसे मुद्रा के इस कार्य से दूर कर दिया है अब यदि एक वस्त्रों का विक्रेता चावल खरीदना चाहता है तो उसे ऐसा चावल विक्रेता ढूँढने की आवश्यकता नहीं है जो बदले में वस्त्र चाहता है। वह वस्त्र बेचकर मुद्रा प्राप्त कर सकता है। और उस प्राप्त मुद्रा से चावल खरीद सकता है। अतः मुद्रा से दोहरे संयोग के अभाव की कमी स्वतः दूर हो जाती है। मुद्रा के इसी कार्य के कारण मुद्रा को सामान्यकृत क्रय शक्ति कहा जाता है।

2. **मूल्य की इकाई**- मुद्रा का 'लेखा की इकाई' कार्य को मूल्यमान का मापक भी कहा जाता है। मुद्रा के इस कार्य का अर्थ है कि जिस प्रकार प्रत्येक चर को मापने की एक इकाई होती है वजन को किलों में, कद को सेमी. में, दूरी को किमी. में इसी प्रकार किसी वस्तु के मूल्य को मुद्रा में मापा जाता है। अतः मुद्रा मूल्य की मापक इकाई का कार्य करती है। यदि कोई पूछे कि इस पर्स का क्या मूल्य है। तो हम यह नहीं कहेंगे कि एक पर्स बराबर 5 किलो चावल या 10 पेन बल्कि हम मौद्रिक रूप में उसका मूल्य बतायेंगे। अतः मुद्रा लेखा की इकाई कार्य करती है। वस्तु विनिमय प्रणाली में सामान्य मूल्य मापक या लेखा की इकाई का कर दिया।

अभाव या जिसे मुद्रा के इस कार्य ने दूर

3. **स्थगित भुगतान का मान-** आस्थगित भुगतान ये भुगतान होते हैं जो भविष्य में किसी समय भुगतान किये जाते हैं। क्योंकि मुद्रा का अपना मूल्य अर्थात् उसकी क्रय शक्ति सामान्यतः अपरिवर्ती रहती है। एक आधुनिक अर्थव्यवस्था में व्यावहारिक लेन-देन में साख और उधार का बहुत महत्त्व रहता है। आस्थागित भुगतान या भविष्य भुगतान मुद्रा में ही संभव होते हैं क्योंकि एक तो मुद्रा का मूल्य स्थिर रहता है और इससे मुद्रा का विनिमय का माध्यम कार्य उसे सामान्यकृत क्रयशक्ति प्रदान करता है। मुद्रा का प्रयोग भविष्य भुगतानों से संबंधित खतरे को भी कम कर देती है। आज के समय में मुद्रा के कारण ही इतने दीर्घकालीन समझौते हो पाते हैं।
4. **मूल्य का संचय-** जब कोई व्यक्ति अपनी भविष्य की आवश्यकताओं के लिए 'मूल्य का संचय' करना चाहता है तो वह केवल मुद्रा के रूप में ही कर सकता है। इसके कारण इस प्रकार हैं:
- मुद्रा की क्रय शक्ति अन्य वस्तुओं की तुलना में अपरिवर्तित रहती है।
  - मुद्रा को कीड़ा दीमक आदि नहीं लगता अर्थात् मुद्रा रखे हुए नष्ट नहीं होती।
  - मुद्रा का संचय करने में बहुत कम स्थान की आवश्यकता पड़ती है।
  - मुद्रा को आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान पर या एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को भेजा जा सकता है मान लें कोई व्यक्ति अपनी बेटी की शादी के लिए अभी से कुछ बचत करना चाहते हैं तो क्या वे अभी से भोजन बनवा सकते हैं या वे अभी से वस्त्र खरीदकर रख सकते हैं? नहीं वे मुद्रा के रूप में अपने भविष्य की आवश्यकताओं के लिए मूल्य का संचय कर सकते हैं।
5. **मूल्य का हस्तांतरण-** मुद्रा के कारक मूल्य का हस्तांतरण आसान हो गया है। यदि किसी व्यक्ति को भारत से कनाडा में मूल्य का हस्तांतरण करना है तो मुद्रा के माध्यम से यह बहुत सहज हो गया है। बैंक मुद्रा इसमें और अधिक सहायक है। मुद्रा के इसी कार्य के कारण आज संपूर्ण विश्व एक ग्रामीण अर्थव्यवस्था की तरह लेन-देन कर पा रहा है।

**मुद्रा के प्रत्येक कार्य विनिमय प्रणाली एक कमी को दूर कर रहा है-**

विनिमय प्रणाली की कमी	मुद्रा का वह कार्य जो इस कमी को दूर कर रहा है
i. आवश्यकताओं के दोहरें संयोग का अभाव	i. विनिमय के माध्यम के रूप में
ii. मूल्य की इकाई का अभाव	ii. लेखा/मूल्य की सामान्य मापक इकाई के रूप में
iii. स्थगित भुगतानों के मापक का अभाव	iii. मुद्रा स्थगित भुगतानों के मापक के रूप में
iv. मूल्य के संचय का अभाव	iv. मूल्य का संचय मुद्रा के रूप में
v. हस्तांतरण में कठिनाई	v. मूल्य के हस्तांतरण का कार्य

इस प्रकार मुद्रा का प्रत्येक कार्य वस्तु विनिमय प्रणाली की एक कमी को दूर कर रहा है।

प्रश्न 3 संव्यवहार के लिए मुद्रा की माँग क्या है? किसी निर्धारित समयावधि में संव्यवहार मूल्य से यह किसी प्रकार संबंधित हैं?

उत्तर - मुद्रा की माँग संव्यवहार को पूरा करने के उद्देश्य से की जाती हैं तो इसे संव्यवहार के लिए मुद्रा की माँग कहा जाता है। अन्य शब्दों में यह गृहस्थों तथा फर्मों द्वारा अपने दिन-प्रतिदिन के लेन-देन के कार्यों के लिए की गई में समय का अन्तर होता हैं। यदि कोई व्यक्ति अपनी आय मासिक आधार पर प्राप्त करता हैं और मास के पहले दिन बिल का भुगतान करते हैं, तो हमें पूरे मास नकद राशि धारण करने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु ऐसा नहीं है लोग अलग-अलग समय पर आय प्राप्त करते हैं। उनका व्यय उस पूरे समयांतराल में लगातार होता रहता है। व्यक्ति एवं फर्म कितनी मात्रा में नकदी का संचय करना चाहेंगे यह सौदों की कुल मात्रा पर निर्भर करता है अर्थव्यवस्था में कुलसौदों की मात्रा राष्ट्रीय आय पर निर्भर करती हैं। सूत्र के रूप में  $Md \backslash T = K \cdot T$ । जहाँ  $Md \backslash T$  = संव्यवहार के लिए मुद्रा की माँग  $K$  = धनात्मक अशा  $My = kPY$   $T$  = एक इकाई समयावधि में अर्थव्यवस्था में संव्यवहार का कुल मूल्य एक इकाई समयावधि में अर्थव्यवस्था में संव्यवहार का कुल मूल्य राष्ट्रीय आय तथा कीमत स्तर पर निर्भर करता हैं। अतः हम कह सकते हैं जहाँ,  $y$  = वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद और  $P$  = सामान्य कीमत स्तर है। अतः किसी अर्थव्यवस्था में संव्यवहार के लिए मुद्रा की माँग का अर्थव्यवस्था की वास्तविक आय और उसके औसत कीमत स्तर के बीच धनात्मक संबंध होता हैं।

प्रश्न 4 भारत में मुद्रा पूर्ति की वैकल्पिक परिभाषा क्या है?

उत्तर –

मुद्रा के लिए सट्टा माँग भारत में मुद्रा की पूर्ति की भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा चार वैकल्पिक परिभाषाएँ दी गई हैं नामतः=

M1, M2, My और MA, जो इस प्रकार हैं।

$$M1 = C + DD + OD$$

$$M2 = M1 + \text{डाकघर बचत बैंकों में बचत जमाएँ}$$

$$M3 = M2 + \text{वाणिज्यिक बैंकों की निवल आवधिक जमाएँ}$$

$$M4 = M3 + \text{डाकघर बचत संस्थाओं में कुल जमाएँ (राष्ट्रीय बचत प्रमाणपत्रों को छोड़कर)}$$

जहाँ, C = जनता के पास करेंसी

DD = माँग जमाएँ

OD = रिजर्व बैंक के पास अन्य जमाएँ

इसे M1 को संकुचित मुद्रा तथा M2 को व्यापक मुद्रा कहा जाता है।

प्रश्न 5 वैधानिक पत्र क्या है? कागजी मुद्रा क्या है?

उत्तर –

- **वैधानिक पत्र अथवा वैधानिक मुद्रा-** इससे तात्पर्य उस मुद्रा से हैं जिसे कानून का समर्थन प्राप्त है और कोई भी व्यक्ति इसे अस्वीकार नहीं कर सकता। उदाहरण के लिए, भारत की घरेलू सीमा के भीतर कोई भी व्यक्ति किसी प्रकार के लेन-देन के लिए भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी किये गए 100 ₹ या उससे अधिक के नोटों को लेने से इंकार नहीं कर सकता।
- **कागजी मुद्रा-** इससे तात्पर्य भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी करेंसी नोट और सिक्कों से हैं इसका सोने और चाँदी के सिक्कों की तरह कोई आंतरिक मूल्य नहीं होइता और यह सरकार के आदेश पर प्रचलित होती है। इस मुद्रा को आदेश मुद्रा भी कहा जाता है।

प्रश्न 6 उच्च शक्तिशाली मुद्रा क्या है?

उत्तर – उच्च शक्तिशाली मुद्रा से तात्पर्य देश के मौद्रिक प्राधिकरण द्वारा निगमित की गई मुद्रा से है, इसे मौद्रिक आधार के नाम से भी जाना जाता है। उच्च शक्तिशाली मुद्रा में करेंसी तथा व्यावसायिक बैंक के पास माँग जमाएँ तथा भारतीय रिजर्व बैंक के पास रखी अन्य जमाएँ शामिल की जाती हैं। यह भारतीय रिजर्व बैंक की देश की मौद्रिक प्राधिकरण की संपूर्ण देता को दिखाता है। यदि कोई आम जनता भारतीय रिजर्व बैंक को करेंसी नोट प्रस्तुत करता है, तो रिजर्व बैंक को उस मुद्रा के मूल्य पर अंकित मूल्य की राशि के बराबर का भुगतान करना होता है। इसी तरह भारतीय रिजर्व बैंक में जमा की गई राशि भी लौटाए जाने योग्य होती है, जब जमाधारी इसकी माँग करते हैं।

प्रश्न 7 व्यावसायिक बैंक के कार्यों का वर्णन कीजिए।

उत्तर –

व्यावसायिक बैंक के कार्य-बैंकों के दो सबसे अधिक महत्वपूर्ण कार्य हैं-जमा स्वीकार करना और ऋण देना।

1. **जमा स्वीकार करना-** बैंक लोगों की बचतों को जमा करता है। बैंकों के साथ हम तीन प्रकार के खाते खोल सकते हैं-

(i) बचत खाता

(ii) चालू खाता

(iii) सावधि खाता

i. बचत खाता – यह खाता छोटी-छोटी बचतों को प्रोत्साहित करने के लिए होता है। यह परिवारों के लिए लाभदायक है, जिनको एक बार रुपया जमा करवाने के बाद तुरंत जरूरत नहीं पड़ती है। एक निश्चित सीमा तक ही रकम को इस खाते से हम निकलवा सकते हैं। इसमें ब्याज की दर सावधि जमा से कम होती है।

ii. चालू खाता – यह ऐसी जमा होती है जिनका भुगतान बैंको को खाताधारियों की माँग पर तत्काल करना होता है इस खाते में जमा राशियाँ, माँग जमा कहलाती हैं, क्योंकि माँगने पर कभी भी निकलवा सकते हैं। यह खाता व्यापारी लोगों के लिए उपयोगी होता है, जिनको दिन में कई बार रुपया निकलवाने की जरूरत पड़ती है। चूंकि बैंक को इस खाते का पैसा

सदा तैयार रखना पड़ता है, इसलिए इस खाते में बैंक ब्याज नहीं देता, बल्कि उनसे कुछ-न-कुछ लेता है। चेक द्वारा पैसा निकालने की सुविधा उपलब्ध रहती है।

iii सावधि खाता - सावधि जमा वह होती है जिसकी परिपक्वता की अवधि निर्धारित होती है। इसमें दीर्घ व निश्चित काल के लिए जमा स्वीकार की जाती है, इसलिए इस खाते में ब्याज की रकम अधिक होती है। यह निश्चित अवधि के लिए होता है और समय पूरा होने पर ही इसे निकलवा सकते हैं इससे पहले नहीं। इसमें चेक की सुविधा नहीं होती। यह बहुत ही धनी लोगों के लिए लाभकारी है, जिनको कभी रुपए की जरूरत नहीं होती। मियादी जमा की एक किस्म आवती जमा भी है जिसमें खाता धारक एक निश्चित अवधि तक हर महीन निश्चित राशि जमा करता है। जैसे-3 वर्षों तक 100 ₹ प्रति मास जमा करना। इसे मुद्रा की पूर्ति में शामिल नहीं किया जाता।।

2. ऋण देना - बैंक का दूसरा मुख्य कार्य ग्राहकों को ऋण देना है। बैंक दूसरे लोगों से जमा स्वीकार करता है, उसका एक निश्चित भाग सुरक्षा कोष में रखकर, शेष राशि व्यापारियों व उद्यमियों को उत्पादक कार्यों के लिए उधार दे देता है और उस पर ब्याज कमाता है। वास्तव में बैंक की आय का यही मुख्य स्रोत है। बैंक निम्नलिखित रूपों में ऋण तथा अग्रिम प्रदान करता है। बैंक ऋण निम्नलिखित रूपों में दिया जा सकता है.

i नकद साख

ii मांग उधार

iii अल्पावधि ऋण

iv ओवर ड्राफ्ट

v विनिमय बिलों पर कटौती

3. एजेंसी कार्य - बैंक अपने ग्राहकों का एजेंट के रूप में भी काम करता है जिसके लिए बैंक कुछ कमीशन लेता है। बैंक द्वारा प्रदत्त एजेंसी सेवाएँ निम्नलिखित हैं।

i नकद कोषों का हस्तांतरण-बैंक-ड्राफ्ट उधारे खाते की चिट्ठी तथा अन्य साख-पत्रों द्वारा बैंक एक स्थान से दूसरे स्थान को रकम का स्थानांतरण करता है ये सेवा कम लागत, शीघ्रता और सुरक्षायुक्त होती है।

- ii बैंक अपने ग्राहकों के लिए कंपनियों के शेयर बेचता और खरीदता है। यह कंपनियों के नाम पर हिस्सेदारी में लाभ को बाँटता है।
  - iii नकद संग्रह करना-बैंक अपने ग्राहकों के लिए उनके आदेश पर चेक, धनादेश, हुंडियों आदि की रकम उनके दाताओं से वसूल करता है।
  - iv ग्राहकों को आयकर संबंधी परामर्श देता है और उनके आयकर का भुगतान करता है।
4. सामान्य उपयोगी सेवाएँ-बैंक द्वारा उपलब्ध अन्य उपयोगी सेवाएँ निम्नलिखित हैं
- i बैंक, विदेशी मुद्रा का क्रय-विक्रय करता है।
  - ii कीमती वस्तुएँ जैसे-जेवरात, सोना, चाँदी, कागज पत्रों को सुरक्षित रखने के लिए लाकर्स उपलब्ध करता है।
  - iii पर्यटक चेक और उपहार चेक जारी करता है।

प्रश्न 8 मुद्रा गुणक क्या है? गुणक का मूल्य क्या निर्धारित करता है?

उत्तर -

$$M = CU + DD = (1 + cdr) DD$$

$$H = CU + R = cdr Dd + rdr . DD = (cdr + rdr) D1$$

$$\frac{M}{N} = \frac{(1 + cdr)D1}{(cdr + rdr)D1} = \frac{1 + cdr}{cdr + rdr}$$

यह मुद्रा गुणक का माप है

क्योंकि मुद्रा का स्टॉक सामान्यतया शक्तिशाली मुद्रा के मूल्य से अधिक होता है इसीलिए मुद्रा गुणक का मूल्य १ से अधिक होता है

मुद्रा गुणक के मूल्य निर्धारण में निम्नलिखित अनुपातों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है

1. करेंसी जमा अनुपात

1. करेंसी जमा अनुपात  $(cdr) - \frac{CU}{DD}$  यह के बराबर है

CU = लोगों के पास रखी हुई करेंसी DD = व्यावसायिक बैंक की कोष्ठ नकदी

2. रिजर्व बैंक अनुपात - इसका सूत्र इस प्रकार है

$$\text{रिजर्व बैंक अनुपात} = \frac{\text{व्यावसायिक बैंक का रिजर्व}}{\text{व्यावसायिक बैंक की कुल जमा}}$$

प्रश्न 9 भारतीय रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति के उपकरण कौन-कौन से हैं? बाह्य आघातों के विरुद्ध भारतीय रिजर्व बैंक किस प्रकार मुद्रा की पूर्ति को स्थिर करता है?

उत्तर - केन्द्रीय बैंक/भारतीय रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति के उपकरणों को दो मुख्य श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है-

i. मात्रात्मक उपकरण

ii. गुणात्मक उपकरण

मात्रात्मक उपकरण साख की कुल मात्रा को प्रभावित करते हैं अर्थात् ये साख की कुल मात्रा को बढ़ाते अथवा घटाते हैं जबकि गुणात्मक उपकरण साख की दिशा की प्रभावित करते हैं। यदि अर्थव्यवस्था में स्फीतिकारी दबाव है तो साख को संकुचित किया जाता है और यदि अर्थव्यवस्था में आर्थिक मंदी/अपस्फीतिकारी दबाव है तो साख का विस्तार किया जाता है मात्रात्मक उपायों द्वारा साख को अनुत्पादक उद्देश्यों से कम करके उत्पादक उद्देश्यों के लिए बढ़ाया जाता है।

**1. मात्रात्मक उपकरण-** मात्रात्मक उपकरण मौद्रिक नीति के वे उपकरण हैं जो साख की उपलब्ध कुल मात्रा को प्रभावित करते हैं।

ये इस प्रकार हैं-

i. **बैंक दर-** बैंक दर से अभिप्राय उस ब्याज दर से है जिस पर केन्द्रीय बैंक वाणिज्यिक बैंकों को अल्पकालीन ऋण देता है। से रेपा दर (Repo Rate) भी कहते हैं। यदि अर्थव्यवस्था में स्फीतिकारी दबाव है तो बैंक दर को बढ़ा दिया जाता है, क्योंकि बैंक दर बढ़ने पर वाणिज्यिक बैंक भी ऋणों की ब्याज दर बढ़ा देते हैं और बाजार में साख की माँग कम हो जाती है। दूसरी ओर आर्थिक मंदी के समय भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बैंक दर कम कर दी जाती है इससे ब्याज दर कम हो जाती है और साख की माँग बढ़ जाती है।

ii. **खुले बाज़ार की क्रियाएँ**- जब भारतीय रिजर्व बैंक सरकारी प्रतिभूतियों को खुले बाज़ार में बेचता और खरीदता है तो इसे खुले बाज़ार की क्रियाएँ कहा जाता है। जब अर्थव्यवस्था में स्फीतिकारी दबाव होता है तो भारतीय रिजर्व बैंक प्रतिभूतियाँ बेचता है जिससे वाणिज्यिक बैंकों से वह उतनी नकद राशि खींच लेता है और उनकी ऋण देने की क्षमता कम हो जाती है।

इस प्रकार केंद्रीय बैंक साख की उपलब्धता को नियंत्रित करता है दूसरी ओर जब अर्थव्यवस्था में आर्थिक मंदी होती है तो वह प्रतिभूतियाँ खरीदता है, जिससे वाणिज्यिक बैंक की ऋण देने की क्षमता बढ़ जाती है, क्योंकि उसके पास उपलब्ध नकद राशि बढ़ जाती है।

iii. **नकद आरक्षित अनुमान (CRR)**- प्रत्येक वाणिज्यिक बैंक को अपनी जमाओं का एक न्यूनतम प्रतिशत कानूनी तौर पर केन्द्रीय बैंक के पास रखना पड़ता है। यह दर केंद्रीय बैंक द्वारा निर्धारित की जाती है। जब अर्थव्यवस्था में स्फीतिकारी दबाव होता है तो इस अनुपात को बढ़ा दिया जाता है, क्योंकि साख गुणक =  $1/LAR = 1/CRR+SLR$ . अतः इसके बढ़ने से बैंक की साख निर्माण क्षमता कम हो जाती है। इसके विपरीत आर्थिक मंदी के समय CRR को कम कर दिया जाता है जिससे बैंक की साख निर्माण क्षमता बढ़ जाती है।

iv. **सांविधिक तरलता अनुपात (SLR)**- सांविधिक तरलता अनुपात से तात्पर्य वाणिज्यिक बैंकों की तरल परिसंपत्तियों से है जो उन्हें अपनी कुल जमाओं के एक न्यूनतम प्रतिशत के रूप में दैनिक आधार पर अपने पास रखनी होती है, ताकि वे अपने जमाकर्ताओं की नकद माँग को पूरा कर सकें। CRR की भाँति SLR में भी स्फीतिकारी दबाव की स्थिति में वृद्धि की जाती है, ताकि बैंक की साख निर्माण क्षमता कम हो जाए।

2. **गुणात्मक उपकरण**- ये साख निर्माण के वे उपकरण हैं जो साख की मात्रा को प्रभावित नहीं करते बल्कि साख के प्रवाह को किसी विशेष क्षेत्र की ओर निर्दिष्ट करते हैं। ये मुख्यतः तीन प्रकार के हैं जिनका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है-

i. **सीमांत आवश्यकता**- ऋणों की सीमान्त आवश्यकता से तात्पर्य बैंक द्वारा दिए गए ऋण तथा गिरवी रखी गई वस्तु के वर्तमान मूल्य से हैं। सामान्यतः कोई व्यक्ति जितने मूल्य की वस्तु जमानत के तौर पर बैंक के पास रखता है, बैंक उससे कम का ऋण देता है। इस अन्तर को रखने का उद्देश्य यह होता है कि वस्तु के मूल्य में कमी होने पर बैंक को नुकसान न हो

आदि। करोड़ की प्रतिभूतियों पर बैंक 80 लाख ऋण देता है तो सीमांत आवश्यकता 20% है और यदि वह 60 लाख का ऋण देता है तो सीमांत आवश्यकता 40% हैं। सीमान्त आवश्यकता बढ़ने पर उधारकर्ता की ऋण लेने की क्षमता कम हो जाती है तथा इसके विपरीत रिजर्व बैंक जिस क्षेत्र में ऋण की उपलब्धता बढ़ाना चाहता है उस क्षेत्र के ऋणों के लिए सीमान्त आवश्यकता कम कर देगा जैसे 1 करोड़ की प्रतिभूतियों पर शिक्षा ऋण 90 लाख तक का भी दिया जा सकता है।

इस प्रकार यह साख के प्रवाह की एक विशेष दिशा प्रदान करता है।

**ii. साख की राशनिंग-** साख की राशनिंग से तात्पर्य विभिन्न वाणिज्यिक क्रियाओं के लिए साख की मात्रा का कोटा निर्धारण करना है। ऋण देते समय वाणिज्यिक बैंक किसी विशेष क्षेत्र को कोटे की सीमा से अधिक ऋण नहीं दे सकते।

**iii. नैतिक प्रभाव-** कभी-कभी केन्द्रीय बैंक सदस्य बैंकों पर नैतिक प्रभाव डालकर उन्हें साख नियंत्रण के लिए अपनी नई नीति के अनुसार काम करने के लिए सहमत कर लेते हैं। केन्द्रीय बैंक का लगभग सभी वाणिज्यिक बैंकों पर नैतिक प्रभाव है। बाहरी आघातों के विरुद्ध भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा मुद्रा पूर्ति का स्थिरीकरण- बाह्य आघातों के विरुद्ध भारतीय रिजर्व बैंक स्थिरीकरण के द्वारा मुद्रा की पूर्ति को स्थिर करता है। स्थिरीकरण का अर्थ है भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा विदेशी विनिमय अंतःप्रवाह में वृद्धि के विरुद्ध मुद्रा की पूर्ति को स्थायी रखने के लिए किये गए हस्तक्षेप से हैं। स्थिरीकरण के अन्तर्गत भारतीय रिजर्व बैंक विदेशी विनिमय की मात्रा के बराबर की मात्रा में सरकारी प्रतिभूतियों की बिक्री खुले बाजार में करता है जिससे अर्थव्यवस्था में कुल मुद्रा अप्रभावित रहती है।

इसे विस्तारपूर्वक स्पष्ट किया गया है-

प्रश्न 10 क्या आप ऐसा मानते हैं कि अर्थव्यवस्था में व्यावसायिक बैंक ही 'मुद्रा का निर्माण करते हैं?'

उत्तर - हाँ, वाणिज्यिक बैंक अर्थव्यवस्था में मुद्रा की पूर्ति का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है। वे अपने द्वारा दिए गए ऋणों से संबंधित माँग जमाओं के रूप में साख का सृजन करते हैं। वाणिज्यिक बैंकों

की माँग जमाएँ उनके नकद कोषों से कई गुणा अधिक होती हैं। यदि यह मान लें कि उनके नकद कोषों की राशि ₹ 1000 हैं तथा माँग जमाएँ ₹ 10,000 है, तो अर्थव्यवस्था में मुद्रा की पूर्ति वाणिज्यिक बैंकों के नकद कोषों से दस गुणा अधिक हो जाएगी। इसी प्रकार नकद कोषों के ₹ 1,000 के आधार पर वाणिज्यिक बैंकों ने मुद्रा की पूर्ति में ₹ 10,000 का योगदान दिया।

प्रश्न 11 भारतीय रिजर्व बैंक की किस भूमिका को अंतिम ऋणदाता कहा जाता है?’

उत्तर – अंतिम ऋणदाता के रूप में केंद्रीय बैंक वित्तीय संकट के दौरान वाणिज्यिक बैंकों के लिए गारंटीकर्ता के रूप में तैयार होता है। वाणिज्यिक बैंक अपनी जमाओं को सामूहिक रूप से तुरंत निकलवाने के लिए तत्पर रहने वाले जमाकर्ताओं का विश्वास खो सकते हैं। चूंकि वाणिज्यिक बैंकों के नकद कोष उनकी माँग जमाओं का एक छोटा-सा भाग होते हैं, कोष बाहर जा सकते हैं, जिसके कारण बैंक में वित्तीय संकट आ जाता है। ऐसी स्थिति में केंद्रीय बैंक ही होता है जो वाणिज्यिक बैंक के लिए गारंटीकर्ता की भांति तैयार रहता है और उन्हें जरूरतानुसार ऋण देकर उन्हें दिवालियापन होने से बचाता है।

*Future's Key*

**Fukey Education**